ORIGINAL RESEARCH PAPER

Geography

# ग्वालियर में पर्यटन की सम्भावनाएँ

KEY WORDS:

**डॉ. प्रेम सिंह** सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, माधव महाविद्यालय, ग्वालियर मध्य प्रदेश

## प्रस्तावना :–

मानव के पृथ्वी पर उद्भव से ही, मानव की प्रवृति भ्रमणशील रही है। समय की गति के अनुसार परिवर्तन के साथ – साथ मानव को प्रकृति ने भ्रमण के लिए प्रेरित किया है। विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक, सांस्कृतिक व वातावरणीय विभिन्नताएँ एवं विविधताएँ पर्यटकों के आकर्शण का कारण रही हैं। ग्वालियर में पर्यटन की अपार सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। जैव विविधता की महान सम्पदा वाले भारत देश में पर्यटन से स्थानीय लोगों की आय के साथ–साथ राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई है। वर्तमान समय में पर्यटन दुनिया का सबसे बड़े उद्योंग के रूप में उभरा है।

आधुनिकीकरण एवं जनसंख्या वृद्धि के कारण संसाधनों के बेरहमी के दोहन से जहाँ वनों का क्षेत्र संकुचित होता जा रहा हैं वही दूसरी ओर प्रदूषण वृद्धि ने शहरों में मानव का जीना मुश्किल कर दिया हैं। शहरों में बढ़ती जनसंख्या वृद्धि और कोलाहल से परेषान होकर लोग षहरों से दूर हरित वन क्षेत्रों, वन्यजीव जन्तुओं एवं प्रकृतिक सौंदर्य को निहारने, कुछ क्षणों को सुख – चैन से बितानें के लिए प्रकृति के अनमोल उपहारों के समक्ष लोग पर्यटन स्थलों पर जाते हैं।

उत्तरी मध्य प्रदेश में स्थित ग्वालियर प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विविधता से परिपूर्ण हैं। यहाँ की विशम जलवायु, वनस्पति, जीव – जन्तु, नदी – नालें, आदि रोमांचिक नजारे पैदा करते हैं। यहाँ ट्रेकिंग के लिए ऊँची पहाड़ियाँ हैं। जीव जन्तुओं का अवलोकन करने के लिए उद्यान हैं। भव्य एवं आकर्शक अनेक मंदिर उत्कृष्ट शिल्प और कलात्मकता स्मारकों, पुरानी इमारतों के अवशेश, प्रचीन नगर, किला, मकबरे, राजमहल, नैरो गेज रेल आदि पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

## उद्देश्य :–

शोध पत्र का उद्देश्य ग्वालियर के विभिन्न पर्यटन स्थलों की जानकारी एकत्रित करना एवं पर्यटकों को ग्वालियर के प्रमुख पर्यटन स्थलों से परिचित कराना है।

## विधि तंत्र :–

प्रस्तुत शोध पत्र में विभिन्न पर्यटन स्थलों की जानकारी एकत्रित करने के लिए प्राथमिक आकड़ों मैं सोउद्देष्यपूर्ण अवलोकन विधि के साथ – साथ द्वितीय आकड़ों में विभिन्न प्रकाषित एवं अप्रकाशित शोध पत्रों, शोध ग्रंथ, शिला लेखो, विभिन्न कार्यालयों एवं इंटरनेट की सहायता से आकड़ों को एकत्रित किया गया हैं।

## अध्ययन क्षेत्र :–

ग्वालियर शहर मध्य प्रदेश राज्य के उत्तरी भाग में 26° 12" उत्तरी एवं 78° 10" पूर्वी देशांतर पर स्थित हैं। समुद्र तल से लगभग 211.520 मीटर की ऊँचाई पर स्थित हैं। ग्वालियर शहर का नाम 'ग्वालियापा' नामक ऋषि के नाम पर पड़ा।

ग्वालियर शहर को 'गालव ऋषि की तपोभूमि' एवं संगीत सम्राट 'तानसेन की नगरी' के नाम से भी जाना जाता हैं।

ग्वालियर शहर तीन प्रमुख उपनगरों से मिलकर बना हैं। जिसमें उत्तर दिशा में प्राचीन ग्वालियर, दक्षिण दिशा में लश्कर, एवं पूर्व दिशा में मुरार स्थित हैं। वर्ष 2014 तक शहर में नगर निगम सीमा का कुल क्षेत्रफल 42,335 वर्ग किलोमीटर एवं कुल जनसंख्या वर्ष 2011 के अनुसार 10,54,420 थी। दिसम्बर 2014 के संशोधन के अनुसार ग्वालियर नगर निगम की सीमा के अंतर्गत जनसंख्या बढ़कर 11,59,032 हो गयी एवं नगर निगम के 60 वार्ड से बढ़कर 66 वार्ड किये गयें।

18 बी शताब्दी में सूरज सेन द्वारा स्थापित ग्वालियर शहर दिल्ली–मुम्बई और दिल्ली–चेन्नई रेलमार्ग पर स्थित हैं। राश्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक – 03 (आगरा – मुम्बई), राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक – 75 (ग्वालियर – झाँसी) एवं राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक –92 (भिण्ड – भौगाँव) के मिलन बिन्दु पर ग्वालियर शहर स्थित हैं। ग्वालियर शहर से दक्षिण दिशा में सिथौली औद्यौगिक क्षेत्र, उत्तर दिशा में बानमौर (मुरैना) औद्यौगिक क्षेत्र, एवं पूर्व दिशा में मालनपुर (भिण्ड) औद्यौगिक क्षेत्र, यानि कि तीनों दिशाओं से ग्वालियर शहर उद्योगों से घिरा हुआ हैं। ग्वालियर शहर में राजमाता विजयाराजे सिंधिया हवाई अड्डा भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के देखरेख में संचालित हैं। ग्वालियर शहर से दिल्ली, मुम्बई के लिए हवाई सेवा उपलब्ध हैं।

## ग्वालियर शहर के प्रमुख पर्यटन स्थल :–

ग्वालियर किला – ग्वालियर के सर्वाधिक सर्वाधिक दुर्भेद्य किलों में से एक विशालकाय किला तीन वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में इसका विस्तार है। इस किले का निर्माण आठवी शताब्दी में किया गया था। ग्वालियर किले पर पहुँचने के दो द्वार हैं। जिसमें एक प्राचीन ग्वालियर से एवं दूसरा उरवाई द्वार। प्राचीन ग्वालियर वाले द्वार से गाड़ियों द्वारा नही पहुँचा जा सकता है, केवल उरवाई द्वार के किले के ऊपर गाड़ियों के द्वारा पहुँचा जा सकता है। उरवाई द्वार वाली सड़क के दोनों ओर जैन तीर्थकरों की चट्टानों को काटकर प्राचीन समय में मूर्तिया बनाई गयी हैं, जो पर्यटकों को अपनी कलाकृति के कारण अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

ग्वालियर किले का निर्माण बघेल शासक सूरजसेन ने कराया था। बघेल शासकों का शासन ग्वालियर किले पर रहा। सम्राट मिहिर भोज ने 840 ई. में किले का निर्माण कराया था। 8 वी सदी में राजा मानसिंह तोमर ने मानसिंह महल का निर्माण कराया था। हिंदू, बुद्ध, जैन, सिख, आदि धर्मों का ग्वालियर किले पर स्मारक निर्मित है। ग्वालियर किले पर मानसिंह महल, जहाँगीर महल, कर्ण मंदिर, शाहजहाँ महल, सहत्रबाहु का मंदिर, तेली का मंदिर एवं गूजरी महल आदि स्थित हैं।

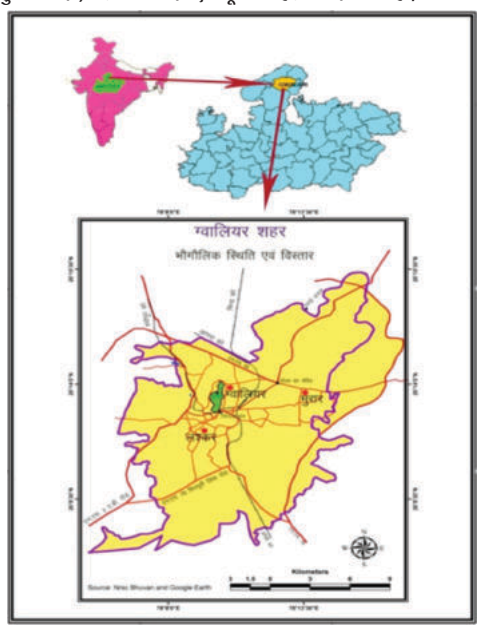

## ग्वालियर व्यापार मेला –

इस मेले का षुभारम्भ सन् 1905 में माधोराव सिंधिया ने किया था। यह मेला एशिया महाद्वीप का सबसे बड़ा व्यापार मेला है। रियासत में अकाल पड़ जाने के कारण कारोवार बंद हो जाने के कारण तात्कालिक शासक सिंधिया जी ने इस मेले का शुभारम्भ 1905 में सागरताल में किया था। 23 अगस्त 1948 को इस मेले को राज्य स्तरीय दर्जा प्राप्त हुआ। 1996 में ग्वालियर व्यापार मेले मेला प्राधिकरण की स्थापना हुई। इसका विस्तार 104 एकड़ में हैं। 2 लाख वर्ग फीट क्षेत्र में पार्क एवं बगीचे एवं 80 हजार वर्ग फीट में हरियाली पट्टी हैं। वर्श 2020 में ग्वालियर व्यापार मेले का व्यापार लगभग 700 करोड़ रहा।

## जयविलास महल –

यह महल वर्ष 1874 में जयाजीराव सिंधिया ने 12.50 लाख वर्गफीट में बनवाया था। वर्ष 1964 में तात्कालिक राश्ट्रपति डॉ. राधाकृश्णन ने जयविलास संग्राहालय का शुभारम्भ किया था। इस महल में 400 कमरे बने हैं, जिनमें 40 कमरों में राज परिवार की दुर्लभ वस्तुएँ रखी हुई हैं। इस महल में आकर्षण का मुख्य केंद्र बेज्यिम के काँच से बने 7 टन के दो झूमरों का लगा होना है।

## महाराज बाड़ा –

इसका दूसरा नाम जीवाजी चौक है। इसके केंद्र में जीवाजी राव सिंधिया की मूर्ति सफेद मार्वल से बनी है एवं इसके चारों ओर 7 महत्वपूर्ण इमारतें निर्मित हैं जिनमें पोष्ट ऑफिस, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, स्टेट बैंक एटीएम विल्डिंग, टाउन हॉल, शासकीय मुद्रालय, विक्टोरिया बाजार, एवं देवघर आदि भव्य इमारतें है जो इटेलियन, रसियन, मराठा, मुगल, राजपूती एवं चाइनीस षैली में निर्मित है। वर्तमान समय में यह शहर का मुख्य हृदय स्थल एवं व्यापारिक केंद्र है। सिंधिया स्टेट के समय 27 नवम्बर 1918 को महाराज बाड़ा पर युद्ध विराम की स्थापना हुई तब पोष्ट आफिस पर सेना एकत्रित हुई थी एवं इस विशाल सभा में ईस्ट इंडिया कम्पनी के अनेक अधिकारी उपस्थित हुए थे।

## ग्वालियर चिड़िया घर –

ग्वालियर चिड़िया घर एक बहुत ही सुंदर स्थान है। आधुनिक दुनिया की भागदौड़ भरी जिंदगी में कुछ पल सुकून के बिताने के लिए चिड़िया घर एक सुंदर एवं रमणीय स्थल है। यहाँ विभिन्न प्रकार के जंगली जानवर जैसे – शेर, तेंदुआ, भालू, बंदर, हिरण, लोमड़ी, लकड़बग्घा, शुतुरमुर्ग, दरियाई घोड़ा, चीता, आदि अनेक छोटे – बड़े, जानवरों की प्रजातियाँ हैं। सफ़ेद मोर, अनेक विदेशी पक्षियों की प्रजातियाँ है। सर्प की विभिन्न प्रजातियाँ भी इसमें मौजूद है।

### मोहम्मद गौस का मकबरा –

ये 16बी शताब्दी के प्रसिद्ध संतों में से एक मुस्लिम संत थे। एवं संगीत सम्राट तानसेन के गुरू भी रहे। इस महबरे का निर्माण चौकेर रूप में हुआ था तथा चारों कोनों पर षट्कोणीय बुर्ज बने हैं जिनका ऊपरी भाग गुम्बदायुक्त हैं। इस मकबरे के चारों ओर पत्थर पर उत्कीर्ण अलंकृत आलेखन युक्त जालियाँ लगी हैं। मकबरे के ऊपरी भाग में एक विशाल गुम्बद बना हुआ है।

### सूर्य मंदिर –

इस मंदिर का निर्माण प्रसिद्ध उद्योगपति जी.डी. बिरला ने 1988 में कराया था। यह मंदिर कोणार्क स्थित प्रसिद्ध सूर्य मंदिर की कलाकृति है। यह सूर्य देवता को समर्पित एक तीर्थ स्थल भी है। इस मंदिर में सूर्य की पहली किरण भगवान सूर्य की प्रतिमा पर पड़ती है। मंदिर की बाहरी दीवारों पर हिंदू देवी–देवताओं के चित्र पत्थरों पर उत्कीर्ण हैं। यह कोणार्क के बाद दूसरा भव्य सूर्य मंदिर है।

### तिघरा बांध –

तिघरा बांध ग्वालियर शहर की प्यास बुझाने का एक मात्र साधन है। इसका विस्तार लगभग 3.5 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में है। मानसून काल में बांध के समीप का जल इसमें एकत्रित हो जाता है। बाद में इस जल को उपचारित करके ग्वालियर शहर में पीने के लिए उपचारित करके पाईप लाइन द्वारा ग्वालियर शहर भेजा जाता है। तिघरा जलाशय में बोटिंग की सुबिधा उपलब्ध है। तिघरा में मोरयाई छट मेला लगता है जिसमें नवविवाहिताओं की मौर का विसर्जन किया जाता है। मेले के समय लाखों की संख्या में स्थानीय लोग एकत्रित होते हैं।

### नलकेश्वर –

गालव ऋषि की तपो भूमि, समाधि स्थल एवं ऐतिहासिक स्थल है। ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर की एक बलषाली रानी गूजरी का गॉव भी है। गूजरी ने अपने गाँव से ही पानी की से पानी की लाइन ग्वालियर किले तक डलवाने की शर्त पर गूजरी राजा मानसिंह तोमर से शादी के लिए तैयार हुई थी। यह प्राकृतिक दृष्टि से परिपूर्ण एक अत्यंत ही रोमांचिक झरना है। यहाँ भगवान शिव का मंदिर एवं चट्टानों से पानी टपकने के कारण वृक्ष की जड़ों से शिवलिंग बनी है।

### देव खो –

देव खो तिघरा बांध से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर एक अत्यंत एवं रोमांचक एवं घने जंगलों ये युक्त है। झरने का पानी इसकी सुंदरता में चार चाँद लगा देता है एवं इसके जंगलों में अनेक जंगली जीव जंतुओं का आवास है।

### गुप्तेश्वर पहाड़ी –

गुप्तेश्वर पहाड़ी एक प्राकृतिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थल है। इस पहाड़ी पर एक ओर नवग्रह एवं हनुमान जी का मंदिर है, तो दूसरी ओर भगवान शिव का प्राचीन मंदिर स्थित है। प्रकृति को नजदीक से निहारने के लिए अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ एवं जीव जन्तु पाये जाते है। पहाड़ी के ऊपर पर्याप्त चौड़ाई के कारण यहाँ खेल कूंद के लिए पर्याप्त स्थान है। यह शहर के सबसे नजदीक, सबसे अच्छा पिकनिक, ट्रेकिंग एवं रॉक क्लाइमिंग के लिए सबसे अच्छा स्थल है। ग्वालियर शहर की किला पहाड़ी के बाद दूसरी सबसे ऊंची चोटी होने के कारण पूरे ग्वालियर शहर को निहारने का दृश्य अपने आप में अद्भुत है।

उपरोक्त उल्लेखित पर्यटक स्थलों के अलावा ग्वालियर शहर एवं शहर के आसपास अनेक ऐतिहासिक, धार्मिक, मनोरंजक के स्थल है। जहाँ भागदौड़ भरी जिंदगी में कुछ पल सुकून के व्यतीत कर सकते है। ग्वालियर शहर के अन्य ऐतिहासिक स्थलों में – सिंधिया रियासत की अनेक छतरियाँ, महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय की बिल्डिंग, ज्यारोग्य अस्पताल में पत्थर वाली बिल्डिंग, कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय की बिल्डिंग, पदमा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की विल्डिंग, गजराराजा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की बिल्डिंग, प्रमुख पार्क – गाँधी पार्क, अम्बेडकर पार्क, नेहरू पार्क, छतरी (लेडीज) पार्क, महारानी लक्ष्मी बाई समाधी स्थल पर स्थित पार्क आदि। प्रमुख तालाब – सागर ताल, जनक ताल, वैजा ताल, कटोरा ताल, मोती झील आदि। प्रमुख बाजार – महाराज बाड़ा पर स्थित गाँधी मार्केट, सुभाष मार्केट, टोपी बाजार, सराफा बाजार, दही मंडी आदि।

सम्पूर्ण ग्वालियर शहर एक बहुत ही सुंदर और आकर्षक का केंद्र है। शिक्षा का हब, चिकित्सा सुविधा उन्नत यातायात की सुविधाएं जैसे – हवाई सुविधा, रेल मार्ग सुविधा, सड़क मार्ग सुविधाएं आदि के कारण प्राचीन समय से ही ये पर्यटकों के आकर्षक का केंद्र रहा है। एक वार जो पर्यटक ग्वालियर घूम जाता है। वो वार – वार ग्वालियर शहर में घूमने आना चाहता है।

### संदर्भ सूची :–


1. सिंह, बी पी : (2004) मध्यप्रदेश में पर्यटन विकास की समस्यायें एवं सम्भावनायें, योजना प्रतिवेदन, यूजीसी (सी. आर. ओ. भोपाल)।
2. शुक्ला, कृष्णा सागर; संभाग में पर्यटन की समस्यायें एवं सम्भावनायें।
3. रावत, ताज : (2002) पर्यटन के विविध आयाम; पर्यावरण पर्यटन से पर्यटन का विकास, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. कुमार प्रमिला : म. प्र. का भौगोलिक अध्ययन, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
5. डिस्ट्रिक गजेटियर, ग्वालियर।